



केप गूजबेरी की वैज्ञानिक खेती: सिद्धांत एवं प्रबंधन तकनीकें



मोहित कुमार, गौरव कुमार पटेल, आर्या सिंह, पल्वी प्रिया, पुष्पेन्द्र एवं आनंद सिंह

फल विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बाँदा-21001

परिचय

केप गूजबेरी एक उच्च पोषक मूल्य वाला फल है, जिसे भारत में सामान्यतः रसभरी या गोल्डन बेरी के नाम से भी जाना जाता है। यह फल अपने आकर्षक पीले से नारंगी रंग, विशिष्ट खट्टा-मीठा स्वाद तथा समृद्ध औषधी गुणों के कारण तेजी से लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, केप गूजबेरी का पौधा एक शाक-प्रकृति या अर्ध-कष्ठीय पौधा होता है, जो सामान्यतः 2-3 फीट ऊँचाई तक विकसित होता है। इस पौधे की वृद्धि एवं विकास विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में हो सकता है, जिसमें अक्षांश सीमा लगभग 45° दक्षिणी से 60° उत्तरी तक तथा ऊँचाई 500 से 3000 मीटर तक उचित पाई गई है।



केप गूजबेरी नाम की उत्पत्ति दक्षिण अफ्रीका के "केप ऑफ गुड होप" क्षेत्र से मानी जाती है, जहाँ इस फसल की व्यावसायिक खेती काफी प्रचलित रही है। पोषण दृष्टि से, इस फल में विटामिन, आयरन, एवं एंटीऑक्सीडेंट तत्वों की प्रचुर मात्रा पाई जाती है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। इसे ताजा फल के रूप में उपयोग करने के अलावा विभिन्न प्रसंस्करण उत्पादों जैसे जैली, जैम, ड्राई फ्रूट, जूस एवं बेकरी उत्पादों में भी उपयोग किया जाता है, जिससे इसका आर्थिक महत्व और भी बढ़ जाता है।

उत्पत्ति

केप गूजबेरी एक महत्वपूर्ण छोटी अवधि वाली

फल फसल है, जिसकी उत्पत्ति दक्षिण अमेरिका मानी जाती है। विशेषतः यह पौधा पेरू एवं कोलंबिया के पर्वतीय क्षेत्रों का मूलनिवासी है, जहाँ की जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ इसके प्राकृतिक विकास के लिए अत्यंत अनुकूल रही हैं। इसी कारण इसके वैज्ञानिक नाम *Physalis peruviana* में "peruviana" शब्द का प्रयोग किया गया है, जो पेरू से इसके मूल संबंध को स्पष्ट करता है। दक्षिण अमेरिका से यह फल धीरे-धीरे विश्व के अन्य भागों जैसे यूरोप, अफ्रीका एवं एशिया में प्रसारित हो गया। विशेषतः दक्षिण अफ्रीका के क्षेत्र में इसकी व्यावसायिक खेती की सफलता के कारण इसे शकेप गूजबेरी के नाम से जाना जाने लगा। भारत में केप गूजबेरी की खेती का प्रारंभ मुख्यतः पहाड़ी एवं हल्के ठंडे जलवायु वाले क्षेत्रों में हुआ, जहाँ यह पौधा आसानी से अनुकूलित हो गया। समय के साथ इस फसल की खेती मैदानी क्षेत्रों में भी सीमित स्तर पर प्रारंभ हुई है। वर्तमान में यह भारत के विभिन्न राज्यों में छोटे पैमाने पर उगाया जा रहा है, तथा इसके उच्च पोषक मूल्य एवं औषधी गुणों के कारण इसकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

वानस्पतिक वर्गीकरण

केप गूजबेरी का वैज्ञानिक नाम *Physalis peruviana* है, जो सोलानेसी कुल का एक महत्वपूर्ण सदस्य है। सोलानेसी कुल विश्व के प्रमुख बागवानी एवं खाद्य फसल कुलों में से एक है, जिसमें आलू, टमाटर, बैंगन, मिर्च आदि जैसे आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण फसलें शामिल हैं। इस कुल के पौधों में अन्य शाक फसलों की तुलना में विशिष्ट वानस्पतिक गुण पाए जाते हैं, जो इन्हें वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं। केप गूजबेरी के पौधे की मूल जड़ प्रणाली सुविकसित होती है, जो पौधे को भूमि में दृढ़ता प्रदान करती है। इसका तना सामान्यतः सीधा, शाखित या कुछ हद तक बढ़ने वाला होता है, जो इसे अर्ध-कष्ठीय प्रकृति प्रदान करता है। पत्तियों की व्यवस्था एक के बाद एक होती है तथा पत्तियाँ सिंपल या कुछ हद तक पिननेटली कंपाउंड हो सकती हैं।

सोलानेसी कुल की एक प्रमुख विशेषता इसकी पुष्पीय संरचना है, जिसमें फूलों में गाइनोइकियम बाइकार्पेलरी एवं सिंकार्पस अंडाशय पाया जाता है, जिसमें ऊपरस्थ एवं एक्साइल प्लेसेंटेशन की स्थिति होती है। इस प्रकार की संरचना फलों के उत्पादन एवं बीजों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सोलानेसी कुल में लगभग 102 जेनेरा एवं 2500 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से कई पौधे खाद्य, औषधी एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

Physalis जीनस में लगभग 80 प्रजातियां शामिल हैं, जिनमें से कुछ प्रजातियां जैसे *Physalis alkekengi* एवं *Physalis peruviana* खाने योग्य फल उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें सामान्यतः विंटर चेरी एवं केप गूजबेरी के नाम से जाना जाता है। केप गूजबेरी एक द्विगुणित स्पीशीज है, जिसमें गुणसूत्र संख्या में विभिन्न प्रकार की विभिन्नता पाई जाती है। सामान्यतः $2n = 48$ गुणसूत्र पाए जाते हैं, लेकिन विभिन्न इकोटाइप में यह संख्या परिवर्तनशील होती है। उदाहरणस्वरूप, जंगली इकोटाइप में $2n = 24$, कोलंबिया के खेती वाले इकोटाइप में $2n = 32$, तथा केन्या के खेती वाले इकोटाइप में $2n = 48$ गुणसूत्र दर्ज किए गए हैं। यह अनुवांशिक विभिन्नता पौधे की अनुकूलन क्षमता एवं उत्पादन क्षमता को प्रभावित करती है। इस प्रकार, केप गूजबेरी का वानस्पतिक वर्गीकरण इसके वैज्ञानिक महत्व, अनुवांशिक विभिन्नता एवं आर्थिक उपयोगिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

मृदा

केप गूजबेरी की सफल एवं उच्च उत्पादकता वाली खेती के लिए उचित मृदा एवं अनुकूल जलवायु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह फसल अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ दोमट या बलुई दोमट मिट्टी में सबसे उत्तम विकास करती है। इस प्रकार की मिट्टी पानी को अधिक समय तक रोके बिना समुचित निकास की सुविधा प्रदान करती है, जो कि इस फसल के लिए अत्यावश्यक है, क्योंकि जलभराव की स्थिति पौधे की जड़ प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकती है। मिट्टी का रासायनिक गुण, विशेषतः चम् मान, पौधे की वृद्धि एवं पोषक तत्वों के अवशोषण को सीधे रूप से प्रभावित करता है। केप गूजबेरी के लिए 5.5 से 7.0 के बीच का हल्का अम्लीय से तटस्थ pH स्तर सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। इस स्तर पर नत्रजन, फास्फोरस, पोटैश एवं सूक्ष्म पोषक तत्व पौधों को आसानी से उपलब्ध होते हैं, जिससे उनकी वृद्धि एवं विकास में सुधार होता है। खेत की तैयारी के समय मृदा को भुरभुरी एवं समांग बनाना अत्यंत आवश्यक है।

इसके लिए 2-3 बार अच्छी जुताई कर मृदा को भली-भांति पलटना चाहिए जिससे खरपतवारों का नियंत्रण हो एवं मृदा की वायु संचार क्षमता में वृद्धि हो। इसके साथ ही 15-20 टन प्रति हैक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट मिलाने से मृदा की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में उल्लेखनीय सुधार होता है, जो पौधों की दीर्घकालीन वृद्धि के लिए लाभकारी है। जलवायु दृष्टि से, केप गूजबेरी एक मध्यम तापमान प्रेरिफलता वाली फसल है, जिसके लिए 18-25°C तापमान सर्वाधिक उपयुक्त रहता है। इस तापमान सीमा में पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया, वृद्धि दर एवं फल विकास सबसे उत्तम रहता है। अधिक ठंड; पाला की स्थिति में पौधे की वृद्धि रुक सकती है, जबकि अत्यधिक गर्मी पौधे में जल संभार में कमी एवं शारीरिक तनाव उत्पन्न कर सकती है, जिससे फल उत्पादन प्रभावित होता है। इस प्रकार, उचित मृदा चयन, वैज्ञानिक खेत तैयारी एवं अनुकूल जलवायु की उपस्थिति केप गूजबेरी की सफल एवं उच्च गुणवत्ता वाली खेती के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रवर्धन

केप गूजबेरी का प्रवर्धन मुख्यतः बीज द्वारा किया जाता है इसके लिए पके और स्वस्थ फलों से बीज निकालकर छाया में सुखाया जाता है बीजों को पहले नर्सरी में क्यारी या ट्रे में बोया जाता है लगभग 4-6 सप्ताह में पौधे रोपाई योग्य हो जाते हैं नर्सरी में बीज से पहले मिट्टी को भुरभुरा बनाकर उसमें सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाई जाती है बीजों को हल्की गहराई पर बोकर सिंचाई की जाती है अंकुरण सामान्य 8-12 दिनों में हो जाता है नर्सरी में उगे हुए 20-25 दिन के हो जाते हैं। और उसमें 4-5 पत्तियां आ जाए तब उन्हें खेत में लगाया जाता है। तथा 60x60 सेमी0 दूरी पर रोपित किया जाता है। कुछ क्षेत्रों में कलम या कटिंग द्वारा भी प्रवर्धन किया जाता है।

प्रवर्धन

केप गूजबेरी का प्रवर्धन मुख्यतः बीज द्वारा किया जाता है, जो कि एक सरल, आर्थिक एवं प्रभावी विधि है। उच्च गुणवत्ता वाले पौधे प्राप्त करने के लिए बीजों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए पूरी तरह पके हुए, रोग मुक्त एवं स्वस्थ फलों से बीज निकालकर उन्हें छाया में सुखाया जाता है, जिससे उनकी अंकुरण क्षमता बनाए रखी जा सके। बीजों की बुवाई से पूर्व नर्सरी की मृदा को भुरभुरी एवं उपचारित बनाना आवश्यक होता है। नर्सरी की क्यारी या ट्रे में सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट मिलाकर मृदा की उर्वरता एवं जैविक गुणों को बढ़ाया जाता है। बीजों को हल्की गहराई (1-1.5 सेमी0 पर बोकर हल्की सिंचाई

की जाती है। उचित तापमान एवं नमी की उपस्थिति में अंकुरण सामान्यतः 8–12 दिनों में प्रारंभ हो जाता है। नर्सरी अवस्था में पौधों की नियमित देखभाल, जैसे समुचित सिंचाई, छाया व्यवस्था एवं खरपतवार नियंत्रण, उनकी स्वस्थ वृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक होती है। लगभग 4–6 सप्ताह में पौधे रोपाई योग्य हो जाते हैं। जब पौधों में 4–5 सत्य पत्तियां विकसित हो जाएं एवं उन्हें 15–20 सेंटीमीटर ऊँचाई प्राप्त हो जाए, तब उन्हें मुख्य खेत में स्थानांतरण किया जाता है। खेत में रोपाई 60×60 सेमी⁰ की दूरी पर की जाती है, जिससे पौधों को पर्याप्त स्थान, प्रकाश एवं पोषक तत्व उपलब्ध हो सकें तथा वायु संचार भी उत्तम रहे। इस उचित दूरी से रोग एवं कीट प्रकोप के संभावनाएं भी कम होती हैं। बीज प्रवर्धन के अतिरिक्त, कुछ क्षेत्रों में केप गूजबेरी का प्रवर्धन कलम द्वारा भी किया जाता है, जिसमें स्वस्थ एवं अच्छी गुणवत्ता वाले पौधों से कटी हुई शाखाओं का उपयोग किया जाता है। यह विधि समान गुणवत्ता वाले पौधों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त है, यद्यपि यह बीज प्रवर्धन की तुलना में कम प्रचलित है। इस प्रकार, वैज्ञानिक प्रवर्धन तकनीकों के अनुपालन से उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की उत्पादित की जा सकती है, जो आगे चल कर उच्च उपज एवं बेहतम फल गुणवत्ता सुनिश्चित करती है।

खाद एवं उर्वरक

केप गूजबेरी की उच्च उत्पादकता एवं गुणवत्ता युक्त फल प्राप्त करने के लिए संतुलित खाद एवं उर्वरक प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। पौधों की सही वृद्धि, फल विकास एवं उपज को सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख पोषक तत्वों यथा नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटैश की उचित मात्रा में आपूर्ति करना आवश्यक होता है। सामान्यतः एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिए 80–100 किग्रा⁰ नाइट्रोजन, 60 किग्रा⁰ फास्फोरस एवं 60 किग्रा⁰ पोटैश की सिफारिश की जाती है। नाइट्रोजन पौधों की शाखाओं एवं पत्तियों की वृद्धि को बढ़ावा देता है, जबकि फास्फोरस जड़ प्रणाली के विकास एवं पुष्पन में सहायक होता है। पोटैश फलों की गुणवत्ता, आकार, रंग एवं रोग प्रतिरोध क्षमता को सुधारता है। उर्वरकों के उपयोग का समय एवं विधि भी उतना ही महत्वपूर्ण है। फास्फोरस एवं पोटैश की पूरी मात्रा एवं नाइट्रोजन की आधी मात्रा रोपाई के समय मदा में मिलाकर देनी चाहिए। इसे बेसल डोस के रूप में जाना जाता है। इससे पौधे की प्रारंभिक वृद्धि एवं जड़ विकास सुचारु रूप से होता है। शेष नाइट्रोजन की मात्रा को 30–40 दिनों बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिए। इस प्रक्रिया से पौधों को वृद्धि के मध्य अवस्था में पर्याप्त पोषक तत्व उपलब्ध होते रहते हैं,

जिससे शाखा विकास, फूलन एवं फल धारण की प्रक्रिया में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, जैविक खाद जैसे सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट का उपयोग मृदा की संरचना, जल धारण क्षमता एवं जैविक गतिविधि को बढ़ाता है, जिससे पौधों को दीर्घकालीन लाभ प्राप्त होता है।

सिंचाई

केप गूजबेरी की सफल खेती के लिए सिंचाई प्रबंधन एक महत्वपूर्ण घटक है। यह फसल समुचित एवं नियमित नमी की आवश्यकता रखती है, किन्तु जलभराव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है, इसलिए सिंचाई की उचित योजना अत्यंत आवश्यक है। रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करना आवश्यक होता है, जिससे पौधे मदा में अच्छी तरह स्थापित हो सकें एवं जड़ प्रणाली का प्रारंभिक विकास सुचारु रूप से हो सके। इसके बाद सिंचाई की आवश्यकता मौसम, मदा के प्रकार एवं नमी की स्थिति पर निर्भर करती है, तथा सामान्यतः 7 से 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जाती है। बलुई या हल्की मिट्टी में नमी शीघ्र होने के कारण सिंचाई की आवश्यकता अधिक हो सकती है, जबकि भारी दोमट मिट्टी में नमी अधिक समय तक बनी रहती है, अतः सिंचाई अंतराल बढ़ाया जा सकता है। पौधों की वृद्धि के विभिन्न चरणों, विशेषतः फूलन एवं फल धारण के समय, पर्याप्त नमी बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस अवस्था में जल की कमी से फल विकास एवं उपज प्रभावित हो सकती है।

जल भराव की स्थिति से बचाव करना अत्यावश्यक है, क्योंकि इसे जड़ सड़न, ऑक्सीजन की कमी एवं विभिन्न मदा जनित रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है, जिससे पौधों की वृद्धि बाधित हो जाती है। इसलिए खेत में उचित जल निकास व्यवस्था होनी चाहिए। आधुनिक सिंचाई विधियों में टपक सिंचाई केप गूजबेरी के लिए अत्यंत उपयुक्त पाई गई है, क्योंकि इससे पानी की बचत होती है, नमी सीधे जड़ क्षेत्र में उपलब्ध होती है एवं खरपतवारों की वृद्धि भी कम होती है। इस प्रकार, वैज्ञानिक सिंचाई प्रबंधन अपनाकर पानी के कुशल उपयोग के साथ उच्च उपज एवं बेहतम फल गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है।

खरपतवार नियंत्रण

केप गूजबेरी की खेती में खरपतवार एक महत्वपूर्ण समस्या हैं, क्योंकि यह पौधों के साथ पोषक तत्वों, जल एवं प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे पौधों की वृद्धि एवं उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः समय पर वैज्ञानिक खरपतवार नियंत्रण करना अत्यंत आवश्यक है। रोपाई के 20–25 दिनों बाद

पहली निराई-गुड़ाई करनी चाहिए, जिससे प्रारंभिक अवस्था में उगे हुए खरपतवारों का नियंत्रण हो सके और पौधों को विकास के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध हो सकें। इसे बाद 40-45 दिनों पर दूसरी निराई करना उपयुक्त रहता है, जो शेष खरपतवारों को समाप्त करने में सहायक होती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए हाथ से निराई या हल्के औजारों द्वारा गुड़ाई एक प्रभावी एवं सरल विधि है, जो कि किसानों के लिए सुलभ है। इसके अतिरिक्त, मल्लिंग एक आधुनिक एवं उपयुक्त तकनीक है, जिसमें पौधों के चारों ओर सूखी घास, फसल अवशेष या प्लास्टिक की परत बिछा दी जाती है। इस विधि से खरपतवारों की उत्पत्ति कम होती है, मदा की नमी संरक्षित रहती है, तथा मदा के तापमान में संतुलन बना रहता है।

मल्लिंग के उपयोग से जल संरचना में सुधार होता है एवं सिंचाई की आवश्यकता में भी कमी आती है, जो कि जल संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, यांत्रिक एवं सांस्कृतिक तकनीकों के संयोग से किया गया खरपतवार नियंत्रण केप गूजबेरी की फसल में उच्च उपज एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करता है।

फूल व फलन

केप गूजबेरी में फूलन एवं फलन की प्रक्रिया पौधे की वृद्धि के एक महत्वपूर्ण चरण को दर्शाती है। सामान्यतः रोपाई के लगभग 40 से 50 दिनों बाद पौधों में फूल आना प्रारंभ हो जाता है। फूल छोटे, पीले रंग के होते हैं, जो पत्तियों की कोण ंगसद्ध से विकसित होते हैं। केप गूजबेरी में परागण प्रक्रिया के पश्चात् 10 से 15 दिनों के अन्दर फल का विकास प्रारंभ हो जाता है। इस अवस्था में फल के चारों ओर एक विशिष्ट कागज जैसी झिल्ली का निर्माण होता है, जो फल को भौतिक क्षति, कीटों एवं प्रतिकूल वातावरणीय परिस्थितियों से सुरक्षा प्रदान करती है। फल का विकास धीरे-धीरे होता है, जिसमें प्रारंभिक अवस्था में फल हरे रंग का होता है और परिपक्वता के साथ यह सुनहरा-पीला या नारंगी रंग का हो जाता है। सामान्यतः फल रोपाई के 60 से 80 दिनों के अन्दर पककर तैयार हो जाते हैं, यह अवधि जलवायु, पोषक तत्वों एवं प्रबंधन तकनीकों पर निर्भर करती है।

पौधे की सुरक्षा

केप गूजबेरी की फसल सामान्यतः रोग एवं कीट प्रतिरोधी प्रकृति की होती है, तथा इस पर प्रमुख रोगों एवं कीटों का प्रकोप तुलनात्मक रूप से कम पाया जाता है। किन्तु कुछ परिस्थितियों में विशिष्ट रोगों का प्रकोप हो सकता है, जिसमें प्रमुख रूप से पाउडरी मिल्ड्यू एवं लीफ स्पॉट शामिल हैं, जो पौधों

की वृद्धि एवं फल गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। पाउडरी मिल्ड्यू रोग में पत्तियों एवं कोपलों पर सफेद चूर्ण जैसा आवरण दिखाई देता है, जिससे प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया बाधित होती है। वही लीफ स्पॉट रोग में पत्तियों पर भूरे या काला धब्बे बन जाते हैं, जिससे पत्तियां शीघ्र गिर सकती हैं। इन रोगों के नियंत्रण के लिए 15 दिनों के अंतराल पर वेटेबल सल्फर एवं 0.4% फिटोलन का छिड़काव करना उपयुक्त रहता है। केप गूजबेरी के फलों पर सामान्यतः कीटों का प्रकोप कम होता है, लेकिन फलों के अधिक पकने पर पक्षी द्वारा नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए फलों की समय पर तुड़ाई करना एवं आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षा के उपाय, जैसे जालियों का उपयोग अपनाना लाभकारी होता है।

तुड़ाई

केप गूजबेरी के फलों की तुड़ाई पौधे की वृद्धि एवं फल परिपक्वता के आधार पर निर्धारित की जाती है। सामान्यतः रोपाई के 90 से 120 दिनों बाद फल परिपक्व होकर तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं, यह अवधि जलवायु, प्रबंधन तकनीकों एवं प्रजाति के अनुसार थोड़ा बदल सकती है। फलों की परिपक्वता की पहचान उनके रंग एवं बाह्य संरचना के आधार पर की जाती है। जब फल का रंग हरे से बदलकर सुनहरा पीला या नारंगी हो जाए और फल के चारों ओर उपलब्ध कागज जैसी झिल्ली सुखकर भूरी या हल्की भूरी हो जाए, तो यह तुड़ाई के लिए उपयुक्त अवस्था मानी जाती है। तुड़ाई के समय फलों को धीरे-धीरे हाथ से तोड़ना चाहिए ताकि उन्हें किसी प्रकार की भौतिक क्षति न हो। अधिक जोर से तोड़ने पर फलों के क्षतिग्रस्त होने की संभावना रहती है, जिससे उसकी बाजार गुणवत्ता कम हो सकती है। इसलिए सावधानी एवं वैज्ञानिक विधि से तुड़ाई करना अत्यावश्यक है। सामान्यतः एक स्वस्थ एवं अच्छी तरह से विकसित पौधे से औसतन 2 से 3 किलोग्राम फल प्राप्त होते हैं, यह उपज पौधों की देखभाल, पोषक प्रबंधन एवं जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

उपज

केप गूजबेरी एक छोटी अवधि वाली एवं उच्च मूल्य बागवानी फसल है, जिसे बागों में इंटरक्रॉप के रूप में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इस प्रकार की खेती पद्धति से किसानों को जमीन का अधिकतम उपयोग करने का अवसर मिलता है, जिससे मुख्य फसल के साथ-साथ अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है। उच्च प्रबंधन एवं उचित खेती तकनीकों के अनुपालन से केप गूजबेरी की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। सामान्यतः एक हैक्टेयर क्षेत्र से 4 से 6 टन तक

फल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, यह नजर किसानों द्वारा अपनाई गई तकनीकों, जलवायु परिस्थितियों एवं प्रजाति पर निर्भर करती है। बारहमासी किस्म सामान्यतः अधिक पैदावार देती हैं, क्योंकि इनमें फल धारण की अवधि लंबी होती है और यह लगातार उत्पादन प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार, उचित किस्म का चयन एवं वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ केप गूजबेरी की खेती एक लाभकारी एवं स्थिर आय का स्रोत बन सकती है।

उपयोग

केप गूजबेरी के फलों का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है, जो इसके उच्च पोषक मूल्य एवं स्वादिष्ट गुणों के कारण बहुत लोकप्रिय है। यह फल ताजा या पकाकर दोनों ही रूपों में खाया जा सकता है एवं यह विभिन्न भोजन उत्पादों में उपयोग के लिए उपयुक्त है। ताजा फल के रूप में, केप गूजबेरी को सीधे खाया जाता है, जहाँ इसका खट्टा-मीठा स्वाद उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त, इसे फल सलाद, मिश्रित फल व्यंजन एवं डेसर्ट में भी शामिल किया जाता है। प्रसंस्करण के क्षेत्र में भी केप गूजबेरी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके फलों से जैम, रंउद्ध, जैली, सॉस, जूस, एवं अन्य मिश्रित पेय पदार्थ तैयार किए जाते हैं, जो बाजार में उच्च मांग रखते हैं। इसके अलावा, इसे ड्राई फ्रूट के रूप में भी उपयोग किया जाता है, जिससे इसकी भंडारण क्षमता एवं आर्थिक मूल्य बढ़ जाता है। इस प्रकार, केप गूजबेरी के फलों का विविध उपयोग न केवल पोषक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह प्रसंस्करण उद्योग एवं बाजार में इसके आर्थिक महत्व को भी बढ़ाता है।

***Corresponding E-mail:
buathortanand@gmail.com**